ॐ

कलौ तु केवला भक्तिः

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम

की

सक्षिप्त

विवरण पात्रिका

सम्वत् १९८६

मुद्रकः—भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस"
श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी ।

आश्रम के उद्देश्य

१–श्रीभगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२–गोरक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना

३–जंगलों में वृक्ष लगवाना ओर उसके बीच में जलाशय बनवाना।

४–शिक्षा का प्रचार करना (जिस में मनुष्यमात्र विद्या लाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना।

५–बीमारियोंके अवसर पर दवाई बांटना।

६–आसपास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटाकर शान्ति और प्रेम बढाना।

७–सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म्म का भाव जाग्रत करना।

८–राजा और प्रजा सबहीका हित चिन्तन करना।

ॐ

श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी ।

वैदिक समय से लेकर इतिहास में जो आकर्षण करने वाली और विशेष सत्ता रखने वाली संस्थायें हम को दृष्टिगोचर होती हैं वह ऋषि मुनियों के आश्रम हैं। इन आश्रमों की कृपा से मनुष्यों की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति का विकाश होता था और इन्हीं आश्रमों में निवास करने वाले ऋषि मुनियों के द्वारा जनता में अमृतरूपी आनन्ददायिनी भक्ति के श्रोत बहते थे। यह आश्रम सब प्रकार की शक्तियों के केन्द्र थे या यूं कहिये कि वैदिक सभ्यता का आधार और अवलम्ब एक मात्र ये आश्रम ही थे। बालक और बालिकाओं को सदाचारी शक्तिसम्पन्न, संयमी, वीर और विद्वान् बनाना, दुखियों को उपदेश, सत्संग और सहायता व सेवा द्वारा सुखी और शान्त करना; तपस्वियों को तप का अवसर देना और जिज्ञासुओं को ज्ञान रूपी अमृत से तृप्त करना आश्रमों का ही काम था।

महाभारत काल से आगे चल कर इसी प्रकार की व्यवस्था बुद्ध भगवान् के विहारों में मिलती है जिनके

द्वारा संसार के बहुत बड़े भाग को सैंकड़ों वर्षों तक सुख और शान्ति का उपभोग प्राप्त हुवा। वर्तमान समय में उन आश्रमों के जीवन की कल्पना करना हमारे लिये असम्भव ही है परन्तु फिर भी भारत के मनुष्यों की हृदय तंत्रियां ऋषि मुनियों का नाम सुनतेही आनन्द से फड़कने लगती हैं और वैदिक सभ्यता में रंगे हुवे आस्तिक पुरुषों को यह विश्वास है कि फिर कभी देश में वैसे ही आश्रम होंगे। उसी प्राचीन प्रणाली पर और उन्हीं उद्देश्यों के आधार पर श्रीभगवद्भक्ति आश्रम की स्थापना हुई है। आश्रम को एक वार अवलोकन करने और आश्रमवासियों के जीवन को देखने से सहज ही प्राचीन आश्रमों का दृश्य आंखों के सामने जीवित हो उठता है।

आश्रम की रचना

बस्ती से दूर एकान्त जंगल में इस विशाल और भव्य आश्रम का एक हज़ार बीघा भूमि में निर्माण हुवा है, भूमि बड़ी रमणीक और पवित्र है आश्रम का वातावरण सत्य, अहिंसा और सदाचार का द्योतक है यहां काले हरिण स्वच्छन्दता से विचरते हुए और मयूर निर्भयता से नृत्य करते दिखाई देते हैं। प्राकृतिक दृश्य बड़े

सुन्दर और मनोहर है। पश्चिम दिशामें पर्वतों की माला है, पीपल वट गूलर आंवला नीमादि के बड़े पवित्र ज्ञान, ध्यान, बुद्धि और स्वास्थ्यवर्द्धक हजारों वृक्ष लगाकर बड़ा सुन्दर उपवन बनाया गया है स्थान २ पर लताएं वृक्षों को शोभायमान कर रही हैं।

एक ओर को कांटेदार झाड़ियों और शमी के वृक्षों का छोटा सा जंगल है जिसको आश्रम वासी तपोवन कहते हैं और एक ओर गोचर भूमि है।

आश्रम के मध्य में रामसरोवर नाम का एक बड़ा उत्तम जलाशय है जिसका जल बड़ा पवित्र और स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है क्योंकि यह जल पवित्र, जंगल से जड़ी बूंटियों के ऊपर से बहकर आता है। आश्रम वासियों के रहने के लिये दूर २ भवन व कुटियायें बनी हुई हैं। इन भवनों और कुटियों के आगे पुष्प वाटिकाएं हैं और प्रायः प्रत्येक भवन के निकट प्रथक् २ कूप हैं।

एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने के लिये सुन्दर सड़कें बनी हुई हैं। सब आश्रमवासी ब्रह्मचर्ययुक्त संयम का जीवन व्यतीत करते हैं।

आश्रम में भक्तिभाव, त्याग और पुरुषार्थ की प्रधानता है। सब आश्रमवासी शारीरिकश्रम करते हैं, सब की शिक्षा और दीक्षा भक्ति प्रचार व परोपकार भावना से होती है आश्रम का संचालन एक कमेटी के द्वारा होता है।

आश्रम के विभाग।

१–ब्रह्मचर्याश्रम २–कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ३–महिला-मण्डल (विधवाश्रम) ४–दलित पाठशाला ५–औषधा-लय ६–गौशाला ७–प्रकाशन विभाग (प्रेस, पत्र) ८–अतिथिशाला।

१ ब्रह्मचर्याश्रम

इस विभाग में ब्रह्मचारी वानप्रस्थी और संन्यासी सम्मिलित हैं।

रहन सहन–ब्रह्मचारीगण वानप्रस्थी संन्यासी महात्माओं की निगरानी में रहते हैं इनका जीवन तप और पुरुषार्थ का है नंगे पांव एक लंगोटी मात्र धारण करते हैं, शीत निवारण के लिये चादर और कम्बल काम में लाते हैं। अपने भोजन छादन के काम के अतिरिक्त आश्रम में वृक्ष लगाने, भूमि को खोदने, सड़क बनाने,

घास काटने आदि परिश्रम का काम करते हैं जिससे इनका शरीर बलवान और जीवन स्वावलम्बी हो जाता है। भोजन में मसालों को छोड़ कर दूध दही छाछ और रोटी दाल का प्रयोग करते हैं।

शिक्षा—हिन्दी और संस्कृत की प्रधानता के साथ हिसाबादि सब विषय पढाये जाते हैं संस्कृत शिक्षा समाप्त करने पर अंग्रेजी की रुचि रखनेवाले विद्यार्थियों को अंग्रेजी पढने की सुभीता दी जाती है। लेख लिखना और व्याख्यान देना भी सिखलाया जाता है सब मिल कर नित्य सत्संग और कीर्तन करते हैं शिक्षा बिना मारपीट के प्रेम सहानुभूति और मैत्रीभाव से दी जाती है जिससे शिक्षक और विद्यार्थियों में कौटुम्बिक भाव वर्तमान रहता है।

प्रबन्ध—प्रबन्ध करने में यह विभाग स्वावलम्बी व स्वतंत्र है इस विभाग की अपनी सभा है और सम्मति देने का सबको समान हक है। सामान खरीदना, रखना, भोजन बनाना, अपने औजार रखना, कपड़े सीना, रात को पहरा देना, सब को अपने २ कार्यों पर नियुक्त करना, जो अपने कर्तव्य में भूल करे उससे प्रायश्चित्त करवाना इत्यादि समस्त कार्यों को सभा द्वारा प्रेम

पूर्वक संचालित किया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य सदाचार की रक्षा करते हुए बालकों की शक्तियों का विकाश करके उनको स्वावलम्बी स्वतंत्र और परोपकारी बनाना है। अनेक अड़चनों और बाधाओं के होते हुवे भी दश वर्ष में यह फल निकला है कि कुछ ब्रह्मचारियों ने विद्या पढ कर श्रद्धा भक्ति से अपना जीवन आश्रम के कार्य में लगा दिया है।

इस विभाग में काम करने वालों में सदाचार, स्वास्थ्य पुरुषार्थ, सहानुभूति, श्रद्धा, भक्ति, और प्रेम का विकाश दृष्टि गोचर होता है। भोजन, वस्त्र, पुस्तक इत्यादि सब खर्च मिला कर सात ७) रुपया मासिक होता है। निर्धन बालकों को निःशुल्क लिया जाता है। प्रत्येक बालक को कम से कम ५ वर्ष के लिये दाखिल किया जाता है।

वनस्थी और संन्यासी—आश्रम में रहते हुवे योग्यतानुसार आश्रम की सेवा करते हैं और बाहर जाकर आश्रम के उद्देश्यो का प्रचार करते हैं इस विभाग में नियमानुसार कार्य करने को उद्यत होने पर कोई भी प्रवेश पा सकता है।

२ कन्या ब्रह्मचर्याश्रम

इस विशालाश्रम में एक तरफ कन्याब्रह्मचर्याश्रम है। कन्याब्रह्मचर्याश्रम के बारे में यह कहना अत्युक्त नहीं है कि सदाचार और सादगी की दृष्टि से भारत में यह अद्वितीय संस्था है। इसका प्रबंध भी ब्रह्मचर्याश्रम की भांति होता है। कुछ सज्जन वानप्रस्थ रूप से यहां रहे हैं उनकी सहधर्मिणियाँ आश्रम की कन्याओं को प्रबन्ध में सहायता देती हैं। श्रीमती सूरजदेवी ब्रह्मचारिणी जो कि व्याकरण में सिद्धान्त कौमुदि पढी हुई है और हिन्दी की कई परीक्षायें पास हैं पाठशाला की मुख्य अध्यापिका हैं। ब्रह्मचारियों की भांति कन्याएं सब काम अपने हाथ से करती हैं, अपने बेत बूंटे तथा वृक्ष भी अपने हाथ से लगाती हैं।

शिक्षा—इनको प्रयाग महिला विद्यापीठ की विद्या विनोदनी, विदुषी, और सरस्वती और पंजाब विश्व विद्यायल की रत्न, भूषण, और प्रभाकर की परीक्षाएं दिलाई जाती हैं। प्रयाग की परीक्षाओं में गृहप्रबन्ध हिन्दी, भूगोल, इतिहास, हिसाब, संस्कृत, वैदिक, संगीत, धर्मशास्त्र और अंग्रेजी इत्यादि और पंजाब की परीक्षाओं में हिन्दी साहित्य, हिसाब, इतिहास,

भूगोल आदि विषय हैं। धार्मिक शिक्षा में गीता, रामायण, उपनिषद् और वेदों के कुछ अध्याय भी पढाये जाते हैं। परीक्षाओं का केन्द्र आश्रम ही है। लेख लिखना व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है और ये भी नित्य सत्संग करती हैं। आशा है यहां की पढी हुई कन्याएं सुशील, धर्मपरायण सहनशील, स्वस्थ, श्रद्धालु, और पुरुषार्थ करने वाली बनेंगी। इन का ख़र्च वस्त्रों के अतिरिक्त सात ७) रुपया मासिक है।

६—महिलामंडल (विधवाश्रम)

इस संस्था का उद्देश यह है कि विधवा बहनों को सुशिक्षित और सुयोग्य बना कर परोपकार करने के योग्य बनाया जावे। इस संस्था में वह विधवाएं प्रविष्ट की जाती हैं जो जन्म भर ब्रह्मचर्य व्रत से रहने की प्रतिज्ञा करती हैं। इनको बड़े तप और संयम का जीवन व्यतीत करना पड़ता है, इनके लिये ५ वर्ष आश्रम में रह कर पढ़ना अनिवार्य्य है। गीता, रामायणादि धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त योग्यतानुसार सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है चर्खा कातना और खद्दर पहनना अनिवार्य है। इस संस्था को देख कर और इसमें निवास करने

वाली बहनों से बातचीत करके सहज में यह मालूम हो सकता है कि किस प्रकार हम अपनी दुःखी बहनों को सुखी शान्त और देशोपयोगी बना सकते हैं इस संस्था का प्रबंध आश्रम की निगरानी में है और खर्चा बम्बई की महिला मंडल नाम की संस्था से मिलता है। यह ट्रस्ट श्री सेठ रामनारायण जी रुइया की लड़की श्रीमती शान्ताबाई की तरफ से है इस मंडल के प्रधान श्रीमान् सेठ जमना लाल जी बजाज हैं। प्रत्येक विधवा को मंडल की तरफ से ११) रु० मासिक खर्च मिलता है।

४—दलित पाठशाला

इस पाठशाला में दलित जाति के बालकों की अधिक संख्या है। ये अन्य जाति के बालकों के साथ बैठ कर पढ़ते हैं। इनको योग्यतानुसार सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है। पढने के अतिरिक्त भजन गाना भी सिखलाया जाता है। निससे ये अपनी २ जाति में प्रचार का काम कर सकें। इनमें भंगी, चमार, धानक, नटिया आदि सब जातियों के बालक हैं।

५—औषधालय

वैदिक शास्त्र का प्रचार हो और निर्धन मनुष्य तथा सर्कारी दवाखानों में जानेसे भय खाने वाले आदमियोंको दवाएं मिल सकें यह इस औषधालय का उद्देश्य है।

यहां सबका इलाज मुफ्त किया जाता है। हजारों आदमी लाभ उठाते हैं खास कर ग़रीब आदमियों को इससे बहुत लाभ है। बीमारी के अवसर पर ग्रामों में जाकर दवाएं तकसीम कीजाती हैं। जो ब्रह्मचारी वैदिक का काम सीखना चाहते हैं उनको वैदिक भी सिखाई जाती है।

६—गोशाला

आश्रम का गोशाला विभाग विशेष महत्त्व का है यह गोशाला गोवंश की उन्नति के लिए खोली गई है गौओं के चरने के लिए सैंकड़ों बीघा गोचर भूमि छोड़ी गई है। इसमें उत्तम नसल की दर्शनीय गायें रक्खी जाती हैं। यहां अठारह सेर तक दूध देने वाली गायें मौजूद हैं। वंश की उन्नति के लिये बछड़े और बछड़ियों को खूब दूध पिलाया जाता है। आश्रम में जो बछड़े और बछड़ियां हैं वह साधारण बच्चों से बहुत उत्तम

हैं। इनकी सेवा बड़े प्रेमभाव से की जाती है इस गौशाला के लिये सरकारी अफसरों और देश के नेताओं की यह सम्मति है कि इतनी उत्तम गौशाला देश में दूसरी नहीं है। इस गौशाला के द्वारा हरियाना प्रान्त के उत्तम गोवंश की रक्षा और वृद्धि हो रही है।

७—अतिथिशाला

आने वाले सज्जनों के ठहरने के लिये अतिथिशाला का उत्तम दो मंज़िला भवन है और उसके निकट ही कूप है। भोजन बनाने के लिये रसोई है।

नोटः—यह आश्रम बी. पी. एण्ड. सी. आई. रेलवे के रेवाड़ी जंकशन से जो कि दिल्ली और अलवर के बीच है डेढ़ मील की दूरी पर है॥

८—प्रकाशन विभाग (प्रेस, पत्र)

आश्रम का अपना प्रेस है, जिसमें धार्मिक पुस्तकें छपती हैं और भक्तिनाम की एक सचित्र मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है यह पत्रिका भक्ति, ज्ञान, और धार्मिक साहित्य की दृष्टि से उच्च कोटि की पत्रिकाओं में है। इसका वार्षिक मूल्य २) रुपया है। इस विभाग का उद्देश्य

जनता में सस्ते धार्मिक साहित्य का प्रचार करना है। पुस्तकें लागत मात्र मूल्य पर दी जाती हैं। बीस हज़ार से अधिक भजनों की पुस्तकें जनता में बिना मूल्य वितरण की जा चुकी हैं।

यहां निम्न लिखित पुस्तकें मिलती हैं:—

वेदोपनिषद्

ईश, केन, कठ और माण्डूक्य आदि उपनिषदों का उत्तम संग्रह है। अर्थ हिन्दी भाषा में दिया है सो भी अत्यन्त सरल। आत्मा को सच्ची शान्ति देनेवाली इस अनमोल पुस्तक की न्यौछावर केवल ।=) मात्र

ज्ञानधर्म्मोपदेश

सागर गागर में कर दिया गया है। इस में वेद-वेदान्त की रहस्यमयी उत्तम कविताएं तथा लेख संग्रहीत हैं। मूल्य केवल =)॥।

श्रीमद्भगवद्गीता

मूल, अन्वय, पर्य्याय और सरल भाषा में अर्थ, यह सब क्रमशः इसमें है। गीता के परिचय देने की जरूरत ही क्या है। इतना अवश्य है कि इस टीका को

किसी मत-मतान्तर के पचड़े में न डाल कर शुद्ध रखा गया है। कागज, छपाई सफाई बढ़िया, पृष्ठ-संख्या ४२६ फिर भी प्रचारार्थ न्यौछावर केवल ॥=)

भाषाफक्किकका प्रकाश।

संस्कृत के वैय्याकरण जानते हैं कि भट्टोजिदीक्षित की 'सिद्धान्त कौमुदी' की फक्किकाएं कितनी गम्भीर अतएव क्लिष्ट तथा दुर्बोध हैं। संस्कृत व्याकरण को सुगम बनाने के लिए इन्हीं फक्किकाओं को हिन्दी भाषा में, बड़े सुन्दर ढंग में, गुरु शिष्य के प्रश्नोत्तरों के रूप में समझाया गया है। संस्कृत के विद्यार्थियों और साधारणतः पण्डितों के बड़े काम की है। मूल्य केवल ॥)

अष्टोत्तरशतमन्त्रमाला

यह गीता और उपनिषदों के चुने हुए १०८ उत्तम मन्त्रों की माला है। अर्थ हिन्दी में है। यह माला अवश्य संसार पार करने में सुदक्ष है। न्यौछावर -)।

सत्य शब्द संग्रह।

वेदान्त की उत्तम सन्त वाणियों का संग्रह है। कवित्त, सवैया आदि सभी छन्द हैं। पुस्तक बड़ी सुन्दर

है। मुमुक्षुओं को इसका नित्य पनन और पाठ करना चाहिये। भक्ति, ज्ञान और वैराग्य आदि ऐकत्र सन्निविष्ट हैं। मूल्य ।=) मात्र

सार संग्रह

इसमें भी सार गर्भित, उपदेश पूर्ण, ज्ञान गुम्फित और भाव भरित कमनीय दिव्य कविताओं और सन्त वाणियों का सञ्चय है। संग्रह कैसा कुछ बन पड़ा है, सो इसके नाम से ही देखलो, सब का सार है। संग्रह कर्त्री श्रीमती सूरजदेवी जी हैं। मू० =)

शब्द सदाचार संग्रह

इसमें सन्त महात्माओं की उत्तम वाणियों का संग्रह है। अन्त में सदाचार सम्बन्धी उपदेश हैं। मूल्य ।)

ज्ञान भक्ति योग संग्रह

पुस्तक विषय पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है। इस में पांचों देवताओं की स्तुति है, पश्चत् भक्ति, ज्ञान और योग की भली प्रकार में मीमांसा की गई है मूल्य केवल =)॥

भगवत् गीता दशम अध्याय पर्यन्त

इसमें मोटे अक्षरों में मूल, पश्चात् सरल अन्वय और फिर भाषा में सरल शब्दार्थ है। मूल्य ।)

शब्द संग्रह

इसमें सन्तों की उत्तम वाणियों का संगृह है। पुस्तक संगृह करने योग्य है मूल्य -)॥

भक्ति का भगवद्भक्तांक

यह भक्ति के तीसरे वर्ष का विशेषाँक है। वास्तव में संगृह करने योग्य है। इसमें देश के धुरन्धर विद्वानों सन्त महात्माओं के सुन्दर लेख हैं, भागवतों के ललित भाषा में चरित्र हैं तथा कई तिरंगे और सादा चित्रों से सुसज्जित है। छपाई, सफाई तथा कागज अत्युत्तम लगाया गया है। यह उपहार देने योग्य अत्युत्तम पुस्तक है। मूल्य केवल ॥=)

भक्ति का भगवदंक

यह भक्ति के चौथे वर्ष का प्रवेशांक है। यह भी अपूर्व संग्राह्य पुस्तक है। इसके पढ़ने से ज्ञान का ज्ञान, सत्संग का सत्संग, भगवत् के गुणों का स्मरण तथा उनके दशों अवतारों तथा प्रधान २ भागवतों के सुन्दर चित्रों के दर्शन होते हैं। छपाई सफाई बहुत सुन्दर हुई है तथा ६ तिरंगे और सात सादे सुन्दर चित्रों से

युक्त है। पृष्ठ संख्या १२८, तिस भी मूल्य केवल ।।।) मात्र।

नोटः—डाक खर्च सर्वथा पृथक् लगेगा।

पुस्तक मिलने का पताः—

मैनेजर

"भक्तिप्रेस"

भगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी

मनुष्य मात्र के लिये साधारण नियम।

१–मनुष्य का पहला कर्त्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२–उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ विश्वास रखे।

३–एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४–साधु सज्जन का सत्संग करे।

५–विषयों के आधीन न हो।

६–शत्रुओं की मित्र बनावे।

७–अधिक उपाधि न बढावे।

८–निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९–भूतमात्र पर दया रखे।

१०–अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रखे।

"भक्ति कार्यालय रेवाड़ी से भक्ति मंगाया कीजिये।

क्योंकि

१. यह भक्ति, ज्ञान, योग पूर्ण सचित्र मासिक पत्र है।

२. इसके आरम्भ में सर्वदा भगवत् स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना के अर्थ सहित मंत्र तथा श्लोक रहते हैं।

३. इसमें बड़े २ महात्माओं, भक्तों तथा विद्वानों के लेख और आधुनिक कवियों की सरस भाव पूर्ण कवितायें रहती हैं।

४. इसके अन्तमें प्राचीन महात्माओं के गम्भीर भाव-पूर्ण गाने योग्य भजन रहते हैं।

५. इसके पढ़ने से आपको सत्संग तथा भक्ति का लाभ होगा।

६. वर्ष में एक बार सुन्दर लेखों तथा कई एक मनोहर तिरंगे और इकरंगे चित्रों से विभूषित वृहदाकार का विशेषांक निकलता है जो कि स्थाई ग्राहकों को बिना मूल्य ही मिल जाता है।

७. इसमें रंगीन कवर के अतिरिक्त प्रति मास एक तिरंगा मनोहर चित्र रहता है।

८. इतना सब कुछ होने पर भी इसका वार्षिक चन्दा केवल २) मात्र है इसलिये आज ही पत्र लिख कर इसके स्थाई ग्राहक हो जाइये।

सम्पादक